अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

कृतज्ञता

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : नासिरा शर्मा - जीवन परिचय तथा रचना संसार 1 से 16

1.1 नासिरा शर्मा का जीवनवृत्त

1.1.1 जन्म

1.1.2 माता पिता

1.1.3 बचपन

1.1.4 शिक्षा

1.1.5 नौकरी

1.1.6 विवाह

1.1.7 वैवाहिक जीवन

1.1.8 पारिवारिक परिचय

1.2 नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व

1.2.1 अंतरंग व्यक्तित्व

1.2.2 बहिरंग व्यक्तित्व

1.2.3 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.2.3.1 अतिथ्यशील

1.2.3.2 स्पष्टोक्ति

1.2.3.3 बौद्धिकता

1.2.3.4 भावात्मकता

1.3 पुरस्कार एवं सम्मान

1.4 लेखन का उद्देश्य

1.5 नासिरा शर्मा का रचना संसार

1.5.1 कहानी साहित्य

1.5.2 उपन्यास साहित्य

1.5.3 लेख संग्रह

1.5.4 समीक्षा

1.5.5 अनुवाद

1.5.6 संपादन कार्य

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में चित्रित सांप्रदायिकता 17 से 34

2.1 सांप्रदायिकताा शब्द का अर्थ

2.2 सांप्रदायिकताा शब्द की परिभाषा

2.2.1 डॉ.नि.आ.वक्काणी की परिभाषा

2.2.2 आलोचक डॉ.महिपसिंह की परिभाषा

2.2.3 चमनलाल की परिभाषा

2.3 सांप्रदायिकता मे यथार्थ की भावना

2.4 सांप्रदायिकता का स्वरूप

2.5 'जिंदा मुहावरे' में चित्रित सांप्रदायिकता

2.5.1 हिंदू-मुस्लिम

2.5.2 दंगे फसाद

2.5.3 आंदोलन

2.5.4 राजनीति

2.5.5 अंधविश्वास

2.5.6 धर्मांधता

2.5.7 समाज की मानसिकता

2.5.8 जातीयवाद

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ 35 से 52

3.1 समस्या अर्थ एवं परिभाषा

3.2 समस्या स्वरूप, व्याप्ति

3. 3 समस्याओं के प्रकार

3 .4 सामाजिक समस्याएँ

3.4.1 प्रेम की समस्या

3.4.2 अकेलेपन की समस्या

3.4.3 विवाह समस्या

3.4.4 परिवार नियोजन की समस्या

3.4.5 पति-पत्नी अटूट संबंध की समस्या

3.4.6 जातियवाद की समस्या

3.5 राजनीतिक समस्या

3.5.1 देश विभाजन की समस्या

3.5.2 आंदोलन की समस्या

3.5 .3 हिंदू - मुस्लिम समस्या

3.5 .4 दंगे फसाद की समस्या

3 .6 आर्थिक - समस्या

3.6.1 गरीबी की समस्या

3.6.2 बेकारी, बेरोजगारी की समस्या

3.7 धार्मिक समस्या

3.7.1 अंधविश्वास की समस्या

3.7.2 धार्मिक रीतिरिवाज की समस्या

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास की विशेषताएँ **53 से 70**

4.1 'उपन्यास' शब्द की व्युत्पत्ति

4.2 'उपन्यास' अर्थ एवं परिभाषा

4.3 'उपन्यास' का स्वरूप

4.4 'उपन्यास' की कथावस्तु

4.5 'उपन्यास' की विशेषताएँ

4.5.1 देशप्रेमी समाज

4.5.2 शहरी तथा देशज

4.5.3 सामाजिकता
4.5.5 बदलता परिवेश
निष्कर्ष

पंचम अध्याय : 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास का शैल्पिक विवेचन 71 से 90
प्रस्तावना
5.1 शिल्प का अर्थ
5.2 शिल्प का स्वरूप
5.3 शिल्प का महत्व
5.4 भाषा
5.4.1 भाषा के गुण
5.4.2 भाषा का महत्त्व
5.4.3 भाषा के विविध रूप
5.4.3.1 वर्णनात्मक भाषा
5.4.3.2 व्यंग्यात्मक भाषा
5.4.3.3 आवेशात्मक भाषा
5.4.3.4 भाषा के सौंदर्य साधन
5.4.3.4.1 विशेषण
5.4.3.4.2 उपमान
5.4.4 शब्द के प्रयोग
5.4.4.1 तत्सम शब्द

5.4.4.2 तद्भव शब्द
5.4.4.3 दिवरूक्त शब्द
5.4.4.4 अपशब्द
5.4.4.5 अरबी शब्द
5.4.4.6 फारसी शब्द
5.4.4.7 उर्दू शब्द
5.4.4.8 देशज शब्द
5.4.4.9 विदेशी शब्द
5.4.4.10 बिहारी शब्द
5.4.4.11 अंग्रेजी शब्द
5.4.4.12 संयुक्त शब्द
5.4.5 मुहावरें कहावतों का प्रयोग
5.4.6 शैली
5.4.6.1 अर्थ एवं परिभाषा
5.4.6.2 शैली का स्वरूप
5.4.6.3 शैली के भेद
5.4.6.4 प्रश्नोत्तर शैली
5.4.6.5 पूर्वदीप्ति शैली
5.4.6.6 संवाद शैली
5.4.6.7 वर्णनात्मक शैली
5.4.6.8 स्वप्न शैली
5.4.6.9 व्यंग्यात्मक शैली

5.4.6.10 काव्यात्मक शैली

निष्कर्ष

उपसंहार **91 से 96**

संदर्भ ग्रंथ सूची **97 ते 101**